

॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥ चतुर्थः प्रश्नः ॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्।
तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने
क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुंश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय
मागधम्॥ १ ॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय
रेभम्। नरिष्ठायै भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय
स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय
तक्षाणम्॥ २ ॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्।
शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे
ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय
श्वनितम्॥ ३ ॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।
आर्त्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय
भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्।
बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥ ४ ॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय
 दुर्मदम्। प्रयुञ्ज उन्मत्तम्। गुन्धर्वाप्सराभ्यो ब्रात्यम्।
 सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवैभ्यः कितवम्। इर्यताया
 अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानैभ्यः
 कण्टककारम्॥५॥

उत्सादेभ्यः कुञ्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वार्यः स्नामम्।
 स्वप्रायान्धम्। अर्धर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्।
 प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्जिनम्। उपशिक्षाया
 अभिप्रश्जिनम्। मर्यादायै प्रश्जविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्यै क्षत्तारम्।
 औपन्द्रष्टाय सङ्गहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्।
 प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः
 पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य
 पृष्ठायाभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णगम्।
 देवल्लोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्।
 सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्। अवत्यै वृधायोपमन्थितारम्।
 सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय
 परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मैभ्यो हस्तिपम्। जवायांश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्।

तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्।
कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्।
अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसुरम्। शोकायाभिसुरम्।
उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय
विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्।
निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवन्तोकायम्। संवत्सराय
पर्यारिणीम्। परिवत्सरायाविजाताम्। इदावत्सरायाप-
स्कद्वरीम्। इद्वत्सरायातीत्वरीम्। वत्सराय विजर्जराम्।
सर्वत्सराय पलिक्रीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय
दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो
बैन्दम्। नड्बलाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय
मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनैभ्यः
पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः
किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भूषम्। अन्ताय बहुवादिनम्।
अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्।
आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खध्मम्।

ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मणम्॥१३॥

बीभृत्सायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्।
तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः
सिध्मलम्। पश्चाद्दोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्यृद्ध्या
अपगल्भम्। स॒शराय॑ प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पु॒श्चलू॑मा ल॒भते। वी॒णावा॑दं गण॒कं गी॑ताय॒। याद॑से
शाबु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भद्रव॒तीम्। तू॒णव॑ध्मं ग्रा॒म॒ण्यं पा॑णिसङ्घा॒तं
नृ॒ताय॑। मोदा॒यानु॑क्रोश॒कम्। आ॒न॒न्दाय॑ तल॒वम्॥१५॥

अ॒क्षरा॒जाय॑ कि॒त॒वम्। कृ॒ताय॑ सभा॒विन॑म्। त्रेता॑या
आदि॒नव॑द॒र॒शम्। द्वा॒प॒राय॑ ब॒हिः सद॑म्। कल॑ये सभा॒स्था॒णुम्।
दुष्कृ॑ताय॑ च॒रका॑चार्यम्। अध्व॑ने ब्रह्मचा॒रिण॑म्। पि॒शा॒चेभ्यः॑
सैल॒गम्। पि॒पा॒सायै॑ गोव्य॒च्छम्। नि॒र्ऋ॒त्यै गो॑घा॒तम्। क्षु॒धे
गो॑वि॒क॒र्त॒म्। क्षु॒त्तृ॒ष्णाभ्या॑न्त॒म्। यो गां वि॒कृ॒न्त॒न्तं मा॒सं
भि॒क्ष॑माण उप॒तिष्ठ॑ते॥१६॥

भूम्यै पी॒ठस॑र्पि॒ण॒मा ल॒भते। अ॒ग्नये॑ऽस॒लम्। वा॒यवे॑
चाण्डा॒लम्। अ॒न्तरि॑क्षा॒य व॑श॒न॒र्ति॒न॒म्। दि॒वे ख॑ल॒तिम्।
सू॒र्याय॑ ह॒र्य॒क्षम्। च॒न्द्रम॑से मि॒र्मि॒रम्। नक्ष॑त्रेभ्यः कि॒ला॒सम्।
अ॒ह्ने शु॒क्लं पि॑ङ्ग॒लम्। रा॒त्रि॒यै कृ॒ष्णं पि॑ङ्गा॒क्षम्॥१७॥

वा॒चे पु॒रुष॑मा ल॒भते। प्रा॒णम॑पा॒नं व्या॒नमु॑दा॒न॑ सं॒मानं॑ तान्
वा॒यवे॑। सू॒र्याय॑ चक्षु॒रा ल॒भते। मन॑श्च॒न्द्रम॑से। दि॒ग्भ्यः श्रो॑त्रम्।

प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्।
अतिकृशमत्यसलम्। अतिशुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्ण-
मतिलोमशम्। अतिकिरिटमतिदन्तुरम्। अतिमिर्मिरमति-
मेमिषम्। आशायै जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमाय सन्धये नदीभ्य उथ्सादेभ्य ऋत्यै भाया अर्मेभ्यो मन्यवे यम्यै
दशदश सरोभ्यो द्वादश प्रतिश्रुत्कायै बीभत्सायै दशदश हसाय सप्ताक्षराजाय त्रयोदश
भूम्यै दश वाचे षडथ नवैकान्नविंशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे यम्यै नवदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः
प्रपाठकः समाप्तः॥